परिचय

महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी का जन्म भगवती नर्मदा के उत्तरी तट पर मध्यप्रदेश के सीहौर जिले में 1935 में हुआ। आपके पिता पं. नर्मदाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत के विद्वान् थे। आपकी माता श्रीमती लक्ष्मीदेवी थीं। इनके गुरु थे काशी के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित महादेव शास्त्री पाण्डेय जो सन्यास के बाद स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती नाम से जाने जाते थे और जो काशी के ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरुपीठ के जगद्गुरु शङ्कराचार्य भी थे। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1959 में संस्कृतसाहित्य में एम.ए. उपाधि प्राप्त की और उसमें इन्हें प्रथम श्रेणी के साथ प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

उसी वर्ष आप मध्यप्रदेश की शासकीय महाविद्यालयीय सेवा में प्रवक्ता के राजपत्रित पद पर नियुक्त हुए जहाँ आपको पदोन्नति भी प्राप्त हुई और सहायक प्राध्यापक के रूप में 1970 तक कार्यरत रहे। 22 जनवरी 1970 से काशीहिन्दूविश्वविद्यालय के संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्काय के साहित्यविभाग में रीडर (उपाचार्य) और अध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहकर 1977 में प्रोफेसर (आचार्य) नियुक्त कर दिए गए जहाँ आप 1990 तक कार्यरत थे। पुनर्नियुक्तियोजना में आपने 1992 से 1995 तक पुनः अध्यापनकार्य किया। 1970 से 1987 तक आप संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्काय के साहित्यविभाग के अध्यक्ष तथा छः वर्षों तक सङ्कायप्रमुख (डीन) भी रहे। इसी सङ्काय में 1990 से 1992 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने आपको उत्कृष्ट शोधकार्य के लिये दुर्लभ इमेरिटस फैलोशिप प्रदान की। 1993 से आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत के सम्मानित प्राध्यापक हैं। आप काशीहिन्दूविश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद् (1981-83) के तथा भारत शासन के केन्द्रीय संस्कृत बोर्ड के भी दो बार सदस्य रहे हैं।

सेवारत रहते हुए आपने 1965 में पीएच.डी. तथा 1974 में डी.लिट् की उपाधि क्रमशः रविशङ्करविश्वविद्यालय रायपुर तथा जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर से प्राप्त की। आपको पीएच.डी. उपाधि पहली बार प्रकाशित हेमाद्रिकृत रघुवंशदर्पण नामक टीका के सम्पादन पर प्राप्त हुई। डी.लिट् उपाधि आनन्दवर्धन तथा अलङ्कारसर्वस्व नामक इनके प्रकाशित ग्रन्थों पर परीक्षा के बाद दी गयी। आप अपनी प्रवाहमयी लेखनी से तीन मौलिक महाकाव्य, बीस खण्डकाव्य, दो नाटक, तीन कहानियाँ, संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, काव्यालंकारकारिका, साहित्यशारीरकम्, अलं ब्रह्म, साहित्यालङ्कार तथा छः नवीन साहित्यशास्त्रीय कृतियों का प्रणयन कर संस्कृत विद्या के सजीवता को बनाये रखा। प्राचीन एवं दुरूह उन्नीस संस्कृत ग्रन्थों का सम्पादन कार्य भी आपने किया। केवल इतना ही नहीं सम्पूर्ण कालिदास साहित्य के सुसमीक्षित रूप को आपने नवीनतम पाण्डुग्रन्थों में नागरी लिपि में अपने हाथ से लिख रखा है और मेघदूत को अशोककालीन ब्राह्मी लिपि में भी।

उत्कृष्ट साहित्य सेवा के लिए आपको सन् 1978 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. नीलम संजीव रेड्डी द्वारा राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित किया गया तथा संस्कृति मन्त्रालय म.प्र. शासन द्वारा उद्घोषित 2015 के कबीर सम्मान से महामहित राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द ने नवम्बर 2017 में सम्मानित किया। न केवल राष्ट्रपति सम्मान अपितु आपको दिल्ली की साहित्य अकादमी ने साहित्य अकादमी पुरस्कार (1991), भारतीयभाषापरिषद् कलकत्ता ने कल्पवल्लीपुरस्कार (1993), के.के. बिरला फाउण्डेशन ने वाचस्पति पुरस्कार, (1997) श्रीवाणी न्यास द्वारा श्रीवाणी अलङ्करण (1999), तिरुपति संस्कृत विद्यालय द्वारा महामहोपाध्याय की मानद उपाधि (1999), वाल्मीकि पुरस्कार तथा विश्वभारती पुरस्कार जैसे अनेक पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। सम्प्रति आप 1984 में स्थापित कालिदास संस्थान, वाराणसी के मानद संस्थापक निदेशक के पद को सुशोभित करते हुए ज्ञान-साधना में लीन हैं।

इ.गा.रा.क.केन्द्र संस्कृति संवाद शृंखला के अन्तर्गत चला रहा है। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के ख्यातिलब्ध व्यक्तियों और सांस्कृतिक प्रश्नों पर संवाद आयोजित कर रहा है। इस शृंखला में अब तक डॉ. नामवर सिंह, स्वामी रामानुजाचार्य, श्रीमती एम.एस. सुब्बालक्ष्मी, प्रो. देवेन्द्र स्वरूप, डॉ. बी.बी. लाल, लोकनायक जयप्रकाश नारायण एवं कला ऋषि बाबा योगेन्द्र पर केन्द्रित संवाद आयोजित किए जा चुके हैं। इन संवादों को डी.वी.डी. एवं पुस्तक के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाया जाता है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वेबसाइट: www.ignca.gov.in; ईमेल: igncakaladarsana@gmail.com

फेसबुक: www.facebook.com/IGNCA; ट्विटर:@igncakd

संस्कृति संवाद शृंखला-9 : वाराणसी

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का एक दिवसीय आयोजन 25 अगस्त, 2018

संस्कृत साहित्य के वट वृक्ष : सनातन कवि

महामहोपाध्याय आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संस्कृति संवाद शृंखला-9

मान्यवर,

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र 25 अगस्त 2018 को नवें संस्कृति संवाद शृंखला का आयोजन वाराणसी में करने जा रहा है। यह आयोजन प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् और चिंतक सनातन कवि महामहोपाध्याय आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी पर केन्द्रित होगा। इस अवसर पर आचार्य द्विवेदी जी का सम्मान और उन पर लिखी पुस्तक का लोकार्पण पद्मश्री सम्मान से सम्मानित श्री रामबहादुर राय जी द्वारा किया जायेगा। इस कार्यक्रम में आपकी प्रतीक्षा रहेगी।

डॉ. सच्चिदानन्द जोशी

सदस्य सचिव

कार्यक्रम स्थल

डॉ. के.एन. उडुपा सभागार

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-२२१००५

संस्कृति संवाद शृंखला-9 : वाराणसी

(दिनाङ्क : 25 अगस्त 2018)

कार्यक्रम

उद्घाटन सत्र (सम्मान सत्र)

(प्रातः 11.00 बजे से 12.30 बजे तक)

स्वागत वक्तव्य	:	डॉ. सच्चिदानन्द जोशी (सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र)
सम्मान	:	आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी जी का सम्मान
लोकार्पण	:	आचार्य द्विवेदी जी की जीवनी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण
अध्यक्ष	:	श्री रामबहादुर राय (अध्यक्ष, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास)
मुख्य अतिथि	:	प्रोफेसर राकेश भटनागर (कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)
सारस्वत अतिथि	:	आचार्य भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' (पद्मश्री सम्मान से सम्मानित प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ, वाराणसी)
विशिष्ट अतिथि	:	प्रोफेसर राजाराम शुक्ल (कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

प्रथम सत्र - शास्त्र रचना के क्षेत्र में आचार्य द्विवेदी जी का योगदान

(12.30 बजे से 1.45 बजे तक)

मुख्य वक्ता	:	प्रोफेसर गया चरण त्रिपाठी प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी प्रोफेसर शिवजी उपाध्याय प्रोफेसर कौशलेन्द्र पाण्डेय
अध्यक्ष	:	प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी

भोजनावकाश : अपराह्ण 1.45 बजे से 2.30 बजे तक

द्वितीय सत्र - आचार्य द्विवेदी जी द्वारा रचित काव्य

(अपराह्ण 2.30 बजे से 3.45 बजे तक)

मुख्य वक्ता	:	प्रोफेसर कृष्णकान्त चतुर्वेदी प्रोफेसर केदारनाथ जोशी प्रोफेसर प्रभुनाथ द्विवेदी प्रोफेसर मनुलता शर्मा
अध्यक्ष	:	प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी

तृतीय सत्र - जीवनी/संस्मरण

(अपराह्ण 3.45 बजे से 5.30 बजे तक)

मुख्य वक्ता	:	श्री अमिताभ भट्टाचार्य प्रोफेसर सदाशिव कुमार द्विवेदी
अध्यक्ष	:	प्रोफेसर राजेश्वर आचार्य
वृत्तचित्र प्रदर्शन	:	**संस्कृत साहित्य के वटवृक्ष : सनातन कवि महामहोपाध्याय प्रोफेसर रेवाप्रसाद द्विवेदी**